

Serial No. 10

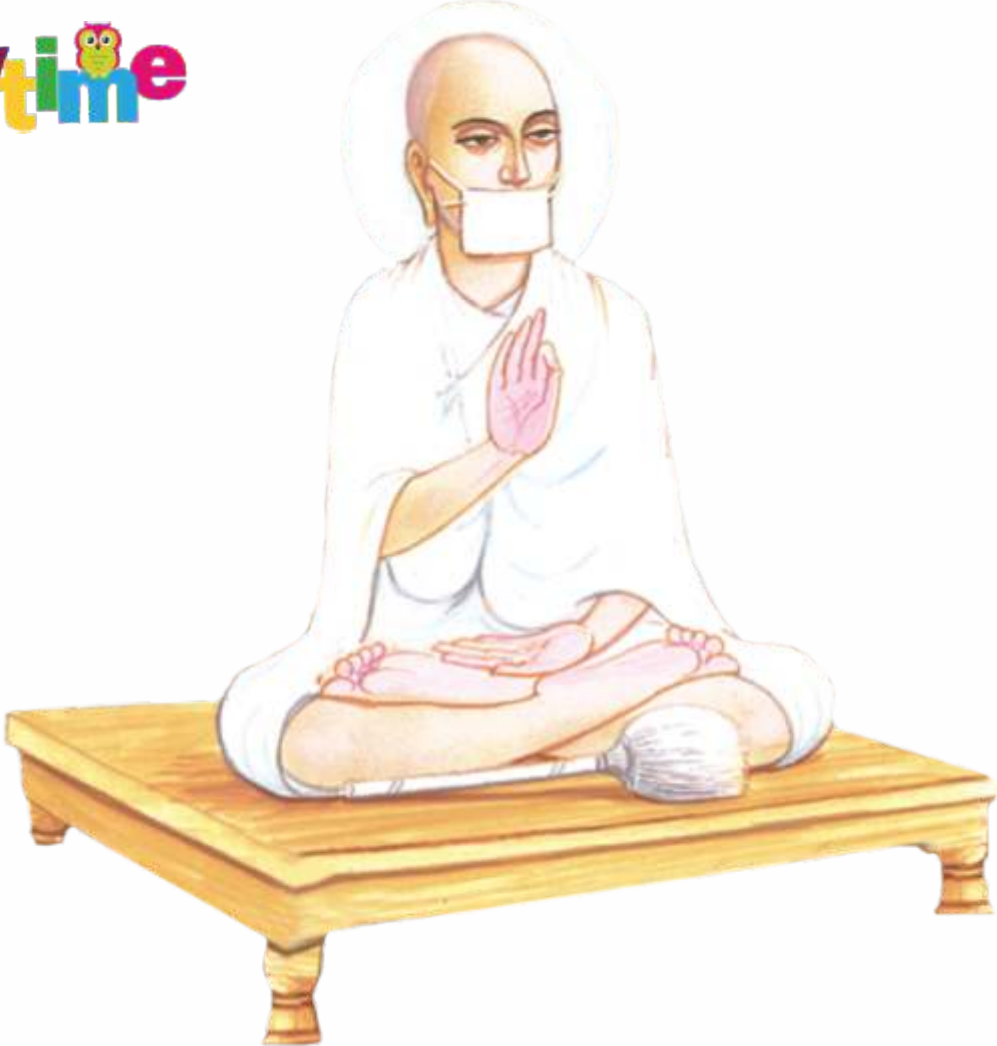


The knowledge of
32 Aagams
in your phone



Inspired by Rashtrasant Param Gurudev Shree Namramuni Maharaj Saheb

JOIN ME FOR
Storytime



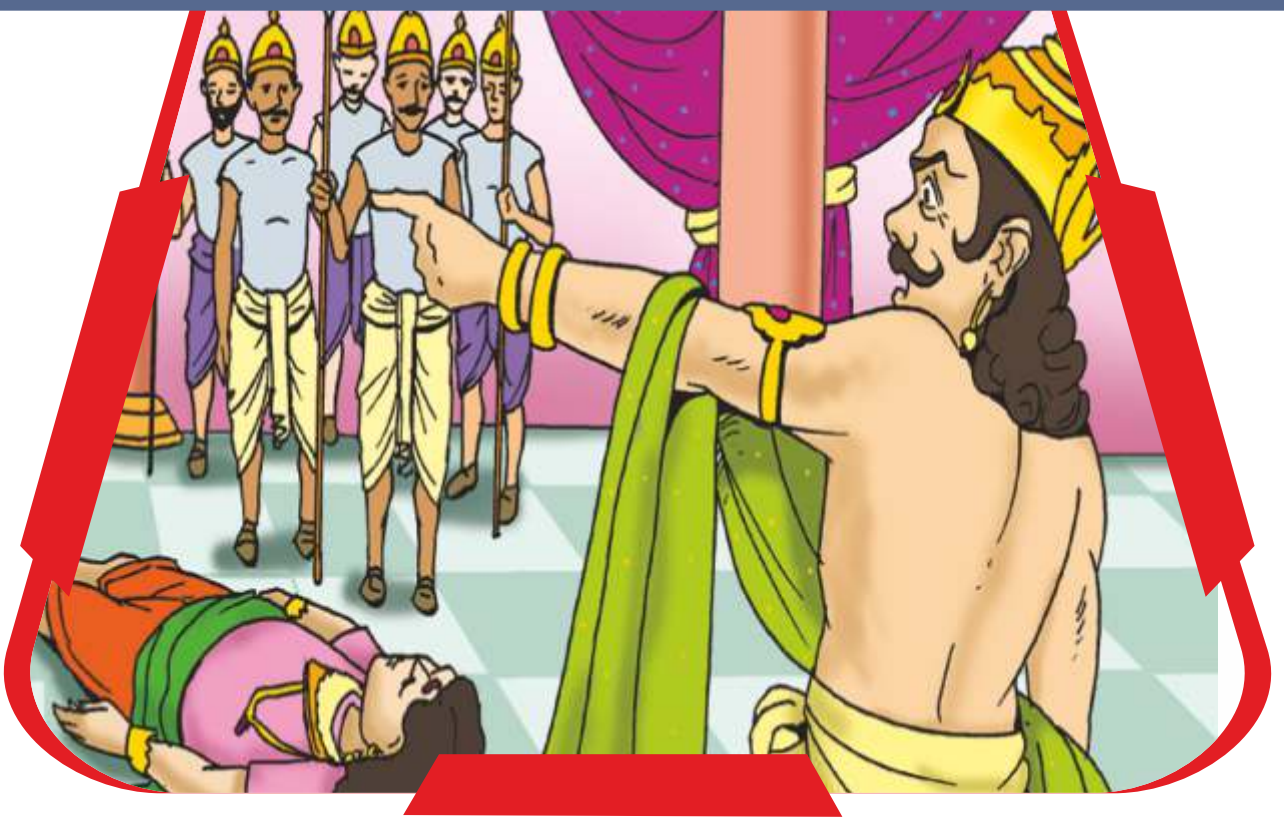
Kurgudu Muni



एक बार एक राजकुमार अपने राज्य में टहल रहे थे की अचानक एक जहरीले साँप ने राजकुमार को डस दिया, जिसके कारण उनकी मृत्यु हो गई।



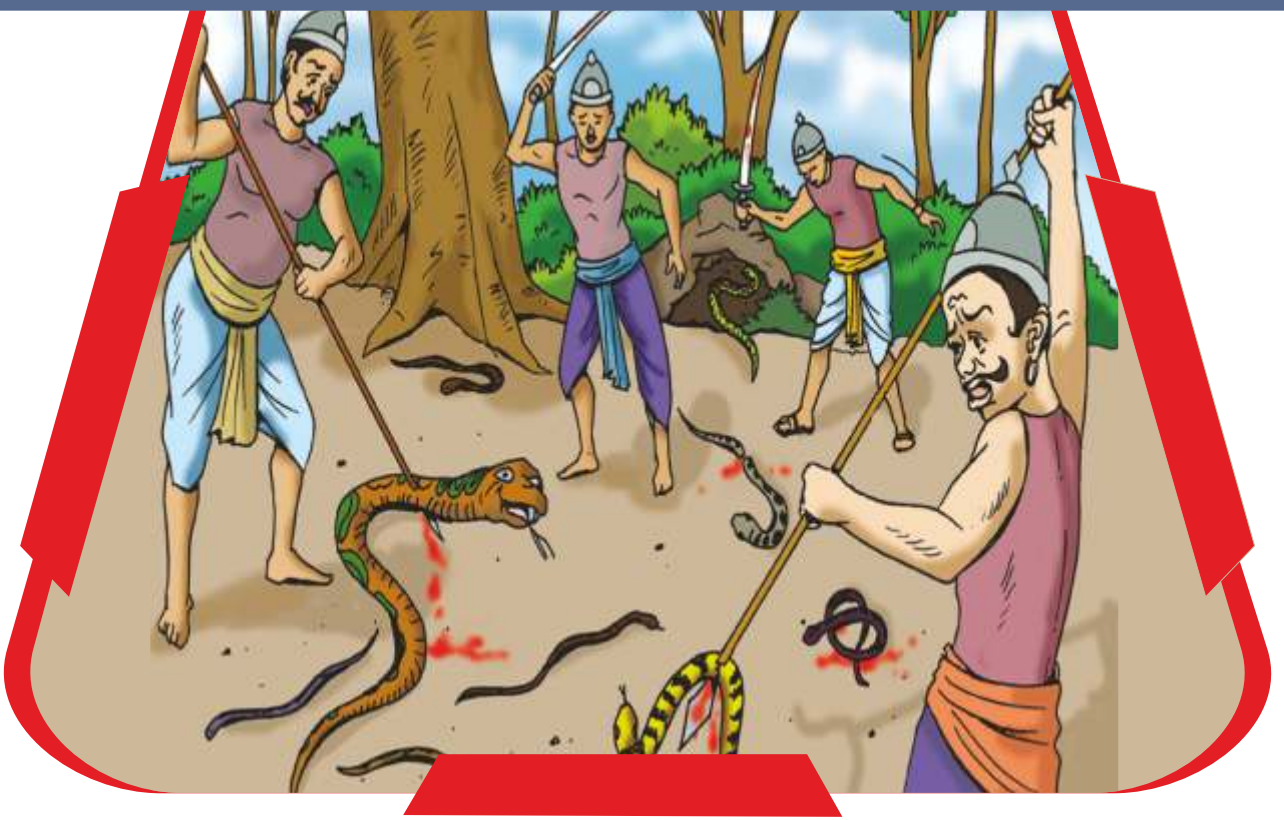
Once upon a time, a prince was walking around in his kingdom and all of a sudden a poisonous snake bit a him, due to which he died instantly.



इसे सुनकर राजा बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने अपने सिपाहियों को राज्य के सभी साँपों को मारने का आदेश दे दिया।



On hearing about this, the king became furious. He ordered his men to kill all the snakes in his kingdom.



सभी साँपों के बीच में एक साँप था जिसकी नजर बहुत जहरीली थी, परंतु वह बहुत दयालु था। उसने अपने आपको बिल में छिपा लिया था। लेकिन इस जहरीले साँप की पूंछ बिल के बाहर रह जाने की वजह से राजा के सैनिक उसे देख लेते हैं और उसे भी मार डालते हैं।

There was one snake amongst all which had a poisonous sight. However he was very Compassionate, he buried himself in a hole. But his tail caught the sight of the soldiers, whilst killing all the other snakes they also killed this snake.



अपने दयाभाव के कारण वह साँप मरकर, उसी राजा के पुत्र के रूप में जन्म लेता है। कुछ समय बाद राजकुमार बड़े हो गये।

Due to Compassion, the snake was reborn as the son of the same king. As time passed, the prince grew up.



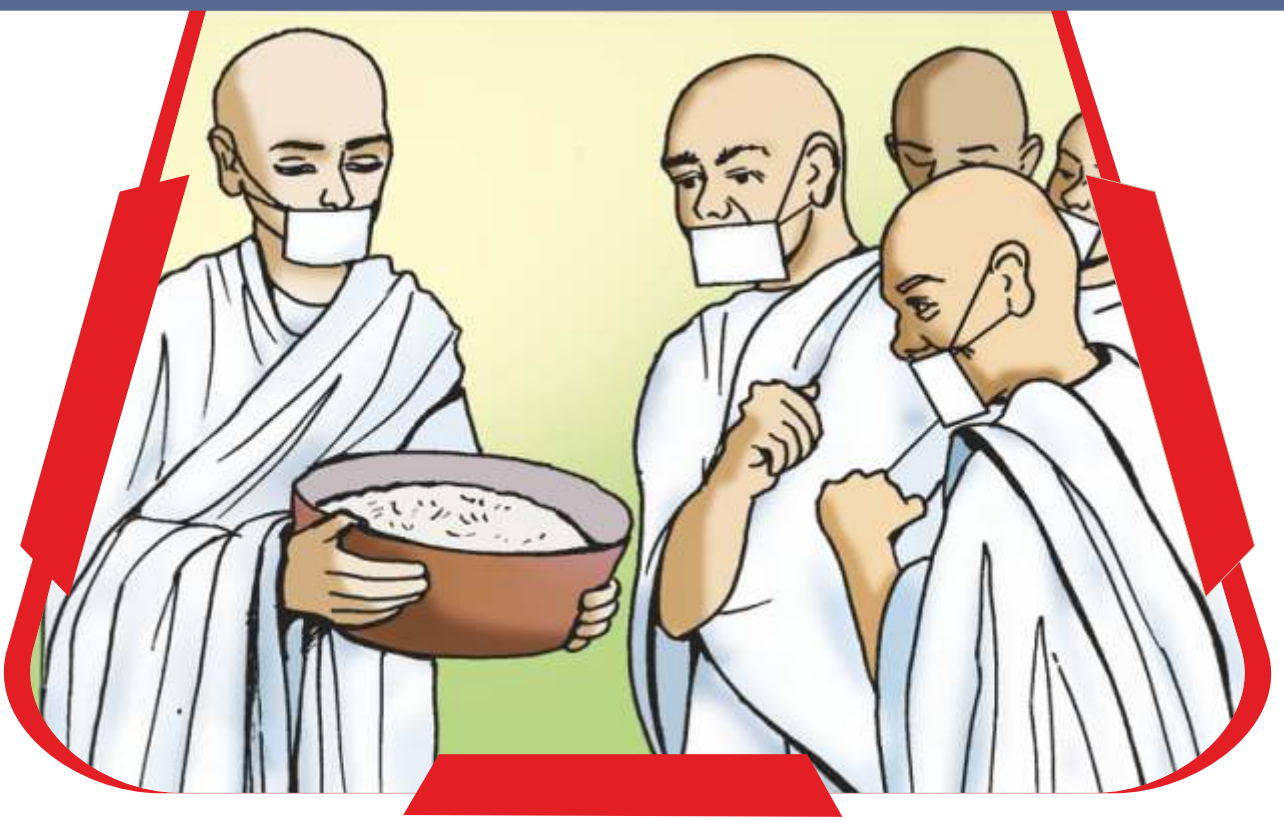
एक दिन जब राजकुमार महल के जरोखें में खड़े थे, तब उन्होंने एक साधु को जाते हुए देखा। वह साधु को देखकर, राजकुमार को जातिस्मरण ज्ञान हुआ और उनको अपना पिछला भव याद आया।

Once the prince was standing in the balcony of his palace and he saw a monk passing by. Upon seeing the monk, the prince remembered his previous birth as a snake and decided to renounce the world and he took Diksha.



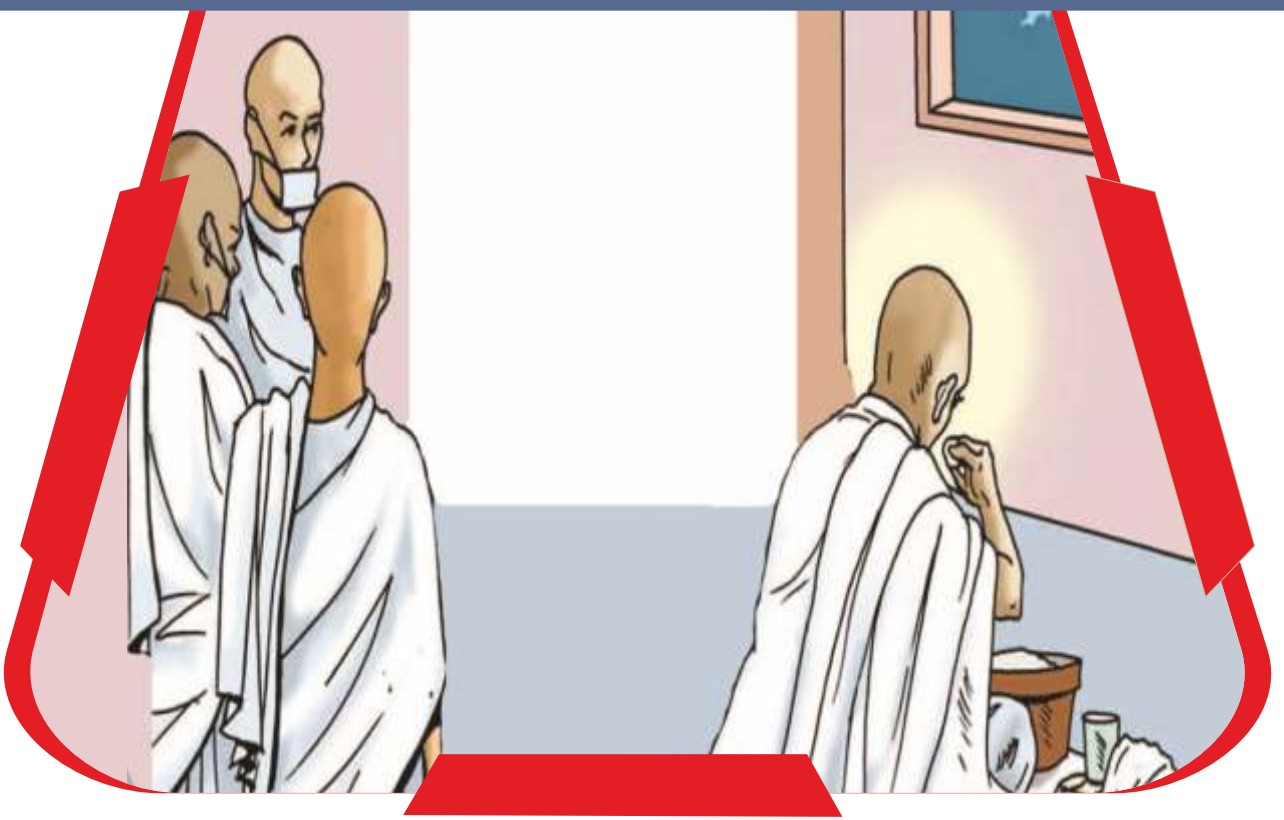
उन्होंने राजपाट छोड़कर दीक्षा ली। दीक्षा के बाद सभी उन्हें कुरुगुडु मुनि के नाम से जानने लगे। कुरु याने की चावल और गुडु मतलब मटका, क्योंकि वह कभी भुखे नहीं रह सकते थे और हमेशा अपने पास चावल से भरा एक मटका रखते थे।

After Diksha he was known as Kurgudu muni. Kur means rice and gudu means a pot, as he could never stay hungry and always used to have a pot of rice with him.



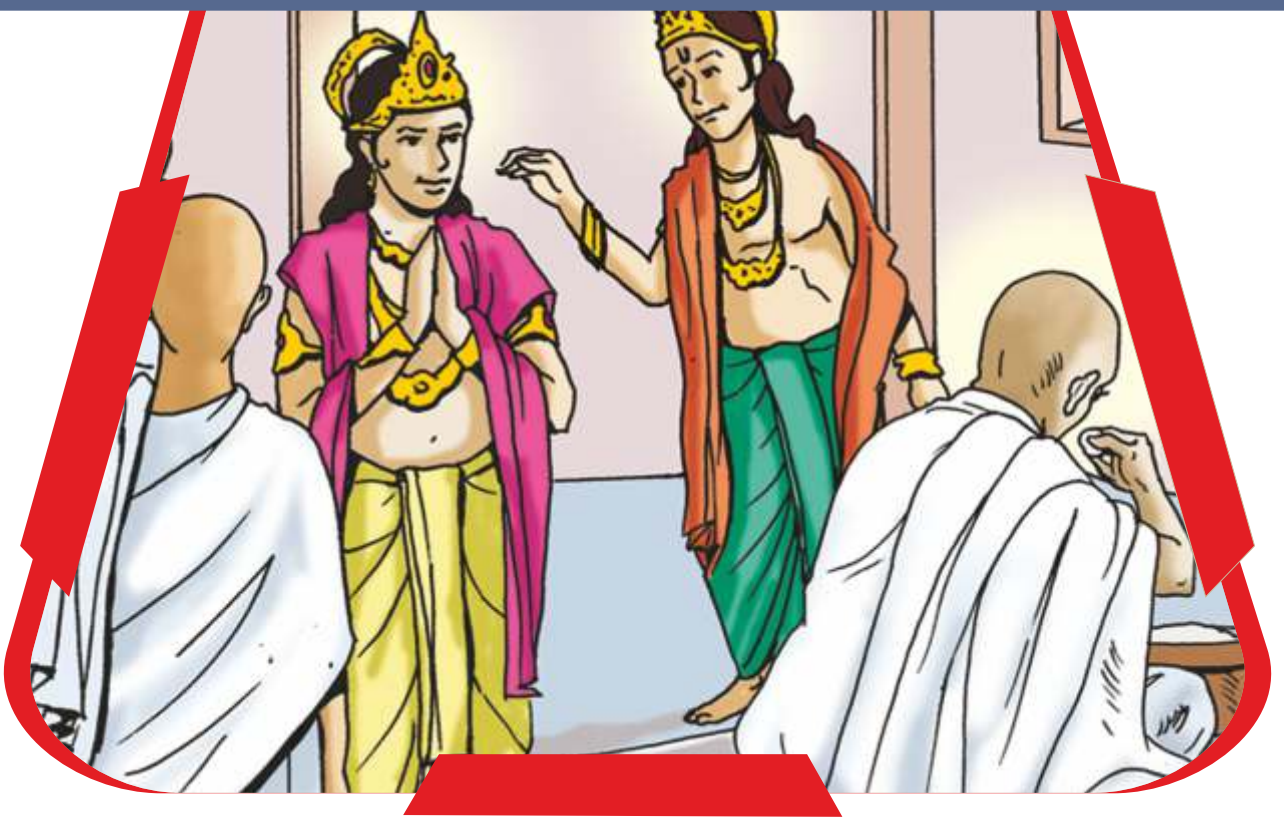
एक बार पर्युषण के दरम्यान, सभी साधु एक महिने के उपवास कर रहे थे। लेकिन कुरुगुडु मुनि कभी भुखे नहीं रह सकते थे, इसलिए वे चावल की भिक्षा लेकर आ गए। खाने से पहले वह अपने गुरु के पास आज्ञा लेने गए। यह देखकर बाकी के साधुओंने चावल में थुककर उनका अपमान किया क्योंकि कुरुगुडुमुनि तप करने में असमर्थ थे।

Once during Paryushan, all monks were fasting for a month. But Kurgudumuni could never stay hungry so he got his pot of rice in gochari. But before eating he went to his Guru to take aagna to eat the rice. On seeing this, other monks insulted him by spitting in his pot of rice, because he could not do Tap.



कुरुगुडु मुनि पूरे पश्चात्ताप के भाव में थे कि... “में कब इस आहार संज्ञा से मुक्त हो कर तपस्वी बनूँगा”। उन्होंने वह चावल ऐसे खाएँ जैसे कि उस में घी मिलाया था और चावल खाते खाते उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हुई।

Kurgudumuni was full of remorse he thought... “When will I achieve freedom from this Aahar sangna and become a Tapasvi myself”. He ate all the rice considering the spit as ghee mixed with rice. His remorse was so high that he attained Kevalgnan whilst eating the rice.



देवलोक के देव, केवलज्ञानी कुरुण्डु मुनि को वंदन करने के लिए आए। यह देखकर, बाकी के साधुओं ने भी अपने दुष्ट्यवहार के लिए पुरे भाव से पश्चाताप किया और उन सभी को भी केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

Devtas from heaven came down to pay their due respect to the Kevalgnani. On hearing this the other monks too were filled with remorse for their behaviour and also too attained Kevalgnan.



तप का महत्व है लेकिन उससे ज्यादा भाव का महत्व है। तप का गर्व करने से तप का फल नहीं मिलता। तप न करने वाले मुनिराज ने खाते खाते शुद्ध विचारों और उत्तम भावों से केवलज्ञान प्राप्त किया।

Tap is important but Bhaav is equally important. Pride of Tap, devalues the fruits of Tap. The monk who could not do any Tap attained Kevalgnan due to his Shudhbhaav.